हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)

(वसंत)(पाठ 19)(मोहनदास करमचंद गांधी – आश्रम का अनुमानित व्यय़)

(कक्षा 7)

प्रश्न अभ्यास

लेखा–जोखा

प्रश्न 1:

हमारे यहाँ बहुत से काम लोग खुद नहीं करके किसी पेशेवर कारीगर से करवाते हैं। गांधी जी छेनी, हथौड़े, बसूले क्यों खरीदना चाहते होंगे ?

उत्तर 1:

गॉधी जी हर छोटा–बड़ा कार्य स्वयं करते थे और दूसरों को भी यही समझाया करते थे कि हमें अपना हर कार्य स्वयं ही करना चाहिए । कोई भी काम किसी के लिए छोटा या बड़ा नहीं होता , यह केवल हमारी सोच पर निर्भर करता है । हर काम स्वयं करने से हमारे अंदर आत्मनिर्भरता आती है । गॉधी जी छेनी ,हथौड़े ,बसूली आदि इसलिए खरीदना चाहते थे क्योंकि वह लोगों को यह बताना चाहते थे कि ये घर में रोजमर्रा के काम की चीजें हैं उन्हें हमें अपने घर में रखना चाहिए ।

प्रश्न 2:

गांधी जी ने अखिल भारतीय कांग्रेस सहित कई संस्थाओं व आंदोलनों का नेतृत्व किया। उनकी जीवनी या उन पर लिखी गई किताबों से उन अंशों को चुनिए जिनसे हिसाब–किताब के प्रति गांधी जी की चुस्ती का पता चलता है।

उत्तर 2:

छात्र अपने पुस्तकालय और शिक्षक की मदद से उपरोक्त प्रश्न को हल करने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न 3:

मान लीजिए, आपको कोई बाल आश्रम खोलना है। इस बजट से प्रेरणा लेते हुए उसका अनुमानित बजट बनाइए। इस बजट में दिए गए किन–किन मदों पर आप कितना खर्च करना चाहेंगे। किन नयी मदों को जोड़ना–हटाना चाहेंगे ?

उत्तर 3:

छात्र पाठ के आधार पर अनुमानित व्यय के लिए प्रेरणा लेकर बाल आश्रम के लिए बजट तैयार करेंगे ।

प्रश्न 4:

आपको कई बार लगता होगा कि आप कई छोटे–मोटे काम ;जैसे घर की पुताई, दूध दुहना, खाट बुनना करना चाहें तो कर सकते हैं। ऐसे कामों की सूची बनाइए, जिन्हें आप चाहकर भी नहीं सीख पाते। इसके क्या कारण रहे होंगे ? उन कामों की सूची भी बनाइए, जिन्हें आप सीखकर ही छोड़ेंगे।

उत्तर 4:

हर छात्र की रुचि अलग–अलग होती है कोई किसी काम को अच्छी तरह सीख सकता है कोई उसी काम को सीख ही नहीं सकता इसलिए छात्र अपनी रुचि के अनुरूप ऐसे प्रश्न के अनुसार कार्यों की सुची तैयार करेंगे ।

प्रश्न 5:

इस अनुमानित बजट को गहराई से पढ़ने के बाद आश्रम के उद्देश्यों और कार्यप्रणाली के बारे में क्या–क्या अनुमान लगाए जा सकते हैं ?

उत्तर 5:

गंधीजी एक बड़े आंदोलन का संचालन कर रहे थे और उनसे मिलने आश्रम में लोंगों के आने का तांता लगा रहता था । उन सब की आवभगत ओर आश्रम के संचालन के लिए एक बजट अनिवार्य था । गांधीजी ने लोगों को स्वावलम्बी बनाने पर जोर दिया उनका एक ही उद्देश्य था कि हम स्वावलम्बी बनें ओर अपने काम स्वयं करें जब हम अपना काम स्वयं करेंगे तो हम तन और मन दोनों से स्वस्थ रहेंगे ।